Dr. Vandana Suman
Professor
Dept. - of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
UG - Sem - IV - MJC - 07
Basic Concepts of Philosophy

"Materialism"
(भौतिकवाद)

भौतिकवाद वह तत्वशास्त्रीय सिद्धान्त है जिसके अनुसार विश्व का मूल आधार भूत या जड़तत्व है। भौतिक पदार्थ देश-काल में फैले हुए तथा अचेतन होते हैं।

भौतिकवाद मानता है कि विश्व के निर्माण, विकास, ह्रास आदि के लिए प्राकृतिक नियम पर्याप्त हैं, इस प्रकार वह प्रकृतिवाद का समर्थक है। वह अनीश्वरवादी भी है क्योंकि यह ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार नहीं करता। भौतिकवाद के लिए भौतिक या लौकिक जगत ही वास्तविक है, इसके अतिरिक्त या परे कोई दूसरा जगत नहीं है। इस जगत का अस्तित्व किसी ज्ञाता के अनुभव पर आश्रित नहीं है। विश्व को ज्ञाता या अनुभव-कर्ता से निरपेक्ष मानने के कारण भौतिकवाद वस्तुवादी कहा जाता है। भौतिकवाद यंत्रवाद का भी समर्थक है क्योंकि विश्व-प्रक्रिया को बिना किसी प्रयोजन के यंत्रवत मानता है।

भौतिकवाद विश्लेषण को तत्व-ज्ञान की पद्धति मानता है। इसकी मान्यता है कि विश्व और इसके सभी पदार्थ अनेक अवयवों के समूह हैं, इसलिए इनकी सच्ची व्याख्या तभी हो सकती है जबकि विश्लेषण कर इनके वास्तविक निर्मायक तत्वों का पता लगाया जाय।

1. भौतिकवाद की सामान्य विशेषताएँ अनेक हैं —

(1) जिसे भौतिकवादी विचारक परम तत्व मानते हैं वह कोई विशिष्ट भौतिक द्रव्य जैसे पत्थर, लोहा आदि नहीं बल्कि सार्वभौम और सार्वत्रिक है। वह सभी पदार्थों के तह में समानतः विद्यमान है और सबका आधार है। विशिष्ट पदार्थों में वह व्याप्त है किन्तु किसी एक में समाप्त नहीं होता है।

(2) भौतिक पदार्थों का अस्तित्व सदा किसी देश और काल में रहता है। अतः सभी भौतिक पदार्थों के विषय में 'कब' और 'कहाँ' का प्रश्न हो सकता है।

(3) भूत की तीसरी सर्वमान्य विशेषता है कि अपनी भौतिक या पारमार्थिक अवस्था में वह अत्यन्त ही सूक्ष्म, असंख्य, निरवयव, अविभाज्य कणों के रूप में रहता है।

(4) भूत की चौथी विशेषता नित्य है। नित्यता भौतिक कणों के निरवयव होने का ही परिणाम है।

भौतिकवाद मानता है कि भिन्न भिन्न तत्वों के संयोग से किसी वस्तु की उत्पत्ति होती है और उसके निर्माणात्मक तत्वों को अलग-अलग कर देने से उसका विनाश होता है। किन्तु मूल भौतिक कण निरवयव हैं इसलिए न उनकी उत्पत्ति हो सकती है न विनाश ही, अतः वे अनादि और अनश्वर हैं। इसलिए कहा जाता है कि भूत से उत्पन्न पदार्थ नष्ट होते हैं किन्तु स्वयं भूत कभी नष्ट नहीं होता।

(5.) भूत से विश्व की व्याख्या के लिए भूत के साथ-साथ गति की आवश्यकता सभी भौतिकवादी स्वीकार करते हैं।

(6.) मूल भौतिक कणों के ज्ञान के विषय में भौतिकवाद का मत है कि इन्द्रियों से केवल विशेषों का ज्ञान हो सकता है किसी सार्वभौम सत्ता का नहीं। भूत सार्वभौम है, इसलिए उसके ज्ञान के लिए केवल इन्द्रियों पर निर्भर करना उचित नहीं है।

पाश्चात्य भौतिकवाद —

1. प्राचीन काल —

पाश्चात्य दार्शनिक एम्पेडोक्लीस के अनुसार चार भौतिक तत्व परमार्थ हैं वे हैं — पृथ्वी, वायु, अग्नि और जल। एम्पेडोक्लीस से भी अधिक शुद्ध और विकसित रूप

भौतिकवाद का ल्यूसिपस और डेमोक्रेटस के दर्शनों में मिलता है, इनके मत को परमाणुवाद कहते हैं क्योंकि इन्होंने भौतिक परमाणुओं को मूल-तत्व माना है। परमाणु भूत के अत्यन्त ही सूक्ष्म, निरवयव, अविभाज्य टुकड़े हैं जो अनेक और अनश्वर हैं। ऐसे तत्वों के लिए 'Atom' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग इन्हीं लोगों ने किया है। परमाणुओं के बीच रिक्त आकाश भी है जो उन्हें अलग रखता है। रिक्त आकाश की आवश्यकता गति के लिए भी है क्योंकि आकाश में ही परमाणु चलायमान होते हैं। इसलिए इनके साथ आकाश भी यथार्थ है। परमाणुओं को गति बाहर से नहीं मिलती बल्कि अन्दर से ही उद्भूत होती है।

2. आधुनिक काल-

इस युग के भौतिकवादी दार्शनिकों की संख्या बहुत है जिनमें हाब्स, हेकेल, मार्क्स आदि प्रमुख हैं।

टामस हाब्स का कहना है कि संसार चक्र भौतिक नियमों के अधीन यंत्रवत है। आत्मा भी मूलतः भौतिक है क्योंकि मस्तिष्क की क्रियाओं का परिणाम है। मनुष्य और पशुओं में सिर्फ विकास

का भेद है, जाति का नहीं। दोनों द्रव्य का चैतन्य से रहित जीवित मशीन मात्र है। हैकेल के मत को एकवादी भौतिकवाद कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने द्रव्य की एकता पर जोर दिया है। भौतिक जगत के दो नियम हैं:

(1.) द्रव्य और शक्ति की अक्षरता।

(2.) सार्वभौम विकास। पहले नियम के अनुसार द्रव्य और शक्ति दोनों अनश्वर हैं और एक ही मूल जड़तत्व के दो रूप हैं। विश्व के सभी मूर्त पदार्थ और सभी शक्तियाँ इसी जड़तत्व के विकार हैं। दूसरे नियम के अनुसार सब कुछ विकास का फल है। भौतिक रासायनिक अवस्था से जीव का विकास होता है और जीवित अवस्था से चैतन्य का।

मार्क्सवादी भौतिकवाद:—

कार्ल-मार्क्स द्वारा प्रतिपादित भौतिकवाद द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद कहलाता है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद वह सिद्धान्त है जिसके अनुसार परमार्थ तत्वभूत है जो स्थिर न रहकर द्वन्द्व नियम के अनुसार सदा विकसित होते रहनेवाला है। द्वन्द्वात्मक विकास के तीन नियम हैं—

गुणात्मक परिवर्तन
1. विरोध-समागम
2. निषेध का निषेध।
3. अर्वाचीन काल-

पहले के भौतिकवादियों ने परमाणु को भूत का अंतिम और अविभाज्य रूप माना है किन्तु आज के वैज्ञानिकों ने परमाणुओं को भी विभाजनीय सिद्ध किया है। आज परमाणु के अन्दर चारतत्व माने जाते हैं।
1. प्रोट्रान 2. इलेक्ट्रान 3 न्यूट्रान तथा 4 पोजिट्रान। ये चार प्रकार के तत्व भूत के मूल कण हैं। इनकी संख्या अनेक है और इनके शक्तिरूप होने से आज भूत को भी स्थिर नहीं बल्कि शक्तिरूप माना जाता है। भूत के स्वरूप को ऐसा ही मानकर इसी को मूल आधार समझ विश्व की व्याख्या अर्वाचीन भौतिकवादी करता है।

भारतीय भौतिकवाद:—

चार्वाक मत :— भारतीय दर्शन में भौतिकवाद का एकही उदाहरण है चार्वाक दर्शन इसके अनुसार विश्व के मूल में चार भौतिक तत्व हैं, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी। इन्हीं के भिन्न-भिन्न

प्रकार के संगठन से निर्जीव, सजीव तथा चेतन सभी पदार्थों की उत्पत्ति होती है। यद्यपि इनमें कोई भी सजीव और चेतन नहीं है किन्तु उनके विशिष्ट संगठन और अवस्था के परिणाम स्वरूप जीवित शरीर बनता है और इसमें एक नूतन गुण चैतन्य का प्रादुर्भाव होता है। यह इसी तरह संभव है जैसे कि पान सुपारी चूना आदि में लाल रंग का अभाव होने पर भी इन्हें एक साथ करके चबाने से लाल रंग आ जाता है। इसीप्रकार जीव और चैतन्य भी उत्पन्न होते हैं। आत्मा शरीर का गुण है। इसलिए शरीर के साथ उसका भी अन्त हो जाना आवश्यक है। अतः आत्मा की अमरता, पुनर्जन्म, मोक्ष, स्वर्ग, नरक आदि कपोल कल्पना मात्र है। ईश्वर में विश्वास करना भी अपने को धोखा देना ही है।

भौतिकवाद की समर्थक युक्तियाँ अनेक हैं —

1. विश्व की उत्पत्ति और इसके विकास के विषय में किए गए वैज्ञानिक अनुसंधान हैं। भूत की परमार्थता सिद्ध करते हैं। आरम्भ में पृथ्वी अत्यन्त ही गर्म वायव्य निहारिका के रूप में थी

निष्प्राण जीवन और चैतन्य का अभाव था। वह निहारिका निस्संदेह भौतिक थी। बाद में ठंडी होकर जब वह जीवित प्राणियों के रहने योग्य हुई तो जीवन का आविर्भाव हुआ और जीवों के विकासक्रम में जब स्नायुमंडल और मस्तिष्क की उत्पत्ति हुई तो चैतन्य का प्रादुर्भाव हुआ। इसलिए मूल विश्व के जन्मकाल से ही विद्यमान रहने के कारण मूल तत्व है और जीव तथा चैतन्य इसके परिणाम हैं।

2. शक्ति की अनश्वरता का नियम भी भौतिकवाद की पुष्टि करता है। विश्व की कुल शक्ति समान रहती है न घटती है न बढ़ती है सिर्फ रूपांतरित होती है। यदि जीव और चैतन्य को हम अभौतिक मान लें तो इस नियम का उल्लंघन होता है। विज्ञानों ने सिद्ध किया है कि शरीर भौतिक तत्वों से बना है इसलिए भौतिक है। जीव और चैतन्य का अधिष्ठान वही है।

3. शरीर से भिन्न चैतन्य या मन का अस्तित्व हम मानसिक क्रियाओं की व्याख्या के लिए स्वीकार करते हैं। किन्तु प्राणियों के जीवन में शरीर के सिवा किसी पदार्थ का हमें अनुभव नहीं होता।

4. शरीर-विज्ञान के अनुसंधानों ने प्रमाणित किया है कि चेतना मस्तिष्क पर निर्भर है। मस्तिष्क शरीर का एक अंग विशेष है। इसी तरह जीवन भी शरीर पर निर्भर है। यदि भौतिक तत्वों (अन्न, जल आदि) से शरीर का पोषण न हो तो जीवन कायम नहीं रह सकता।

5. यदि चैतन्य को शरीर से स्वतन्त्र मान लिया जाय तो शरीर के अभाव में उसका अस्तित्व अक्षुण्ण रहना चाहिए। किन्तु शरीर-विरहित चैतन्य की सत्ता असिद्ध है। अतः शरीर के अभाव में जीवन का भी अन्त हो जाता है।

6. यदि शरीर के बिना भी आत्मा या चैतन्य रह सकते हैं तो चेतन क्रियाओं के लिए शरीर की आवश्यकता नहीं पड़नी चाहिए थी। किन्तु मनोविज्ञान बतलाता है कि उनके लिए स्नायु-मंडल और मस्तिष्क की सक्रियता अपेक्षित है। अतः चेतन शरीर से स्वतंत्र नहीं है। इसप्रकार, भौतिकवाद जीव और चैतन्य दोनों को भूत से उत्पन्न या उसपर आश्रित मानता है किन्तु उनसे भूत को पूर्णतः स्वतंत्र समझता है।

भौतिकवाद के विरुद्ध अनेक आलोचनाएँ भी की गयी हैं जो अनेक हैं—

1. किसी भी तत्वशास्त्रीय सिद्धान्त की सफलता के लिए अनुभूत विश्व की संगत व्याख्या आवश्यक है। अनुभव - जगत में भौतिक और अभौतिक दो तरह के पदार्थ मिलते हैं। भूत से भौतिक पदार्थों की उत्पत्ति असंभव हो जाती है। भूत से जीव की उत्पत्ति कैसे होती है इसकी व्याख्या ये नहीं कर पाते हैं।

2. चैतन्य की व्याख्या भी भौतिकवाद नहीं कर सकता है। भूत से चेतन की व्याख्या दो प्रकार से की जाती है। कुछ लोग जड़ और चेतन में अभेद या तादात्म्य मानते हैं इनका कहना है कि हर प्रकार की चेतन अवस्था की परीक्षा करने पर मस्तिष्क की क्रिया पाई जाती है, इसलिए चेतन मस्तिष्क की क्रिया ही है। इस मत के विरुद्ध हमें कहना है कि भौतिक और चेतन में स्वभावगत विरोध या भिन्नता है। इसलिए दोनों को एक कर देना न्यायोचित नहीं है। कुछ लोगों का कहना है कि चेतन भौतिक नहीं बल्कि भूत का परिणाम या कार्य है। वे कहते हैं कि चैतन्य के साथ मस्तिष्क की क्रिया अवश्यंभावी रूप में विद्यमान रहती है और

बिना इसके चैतन्य पाया नहीं जाता है इसलिए चैतन्य उसपर निर्भर है, उसका परिणाम है। इस युक्ति के विषय में हमें यह कहना है कि मस्तिष्क के भौतिक होने के कारण उसमें उन गुणों का अभाव है जो चैतन्य में विद्यमान है। इसलिए वह चैतन्य का कारण नहीं हो सकता। कोई भी कारण उन गुणों को उत्पन्न नहीं कर सकता जिनसे वह स्वयं वंचित है।

3. भूत से जीव और चेतन की नवीन व्याख्या मार्क्सवादियों ने दी है। वे कहते हैं कि गुणात्मक परिवर्तन के नियम द्वारा परिमाणगत परिवर्तन की विशेष अवस्था में जीव और चैतन्य उत्पन्न होते हैं। किन्तु ऐसा परिवर्तन क्यों होता है? क्यों जीव और चैतन्य से रिक्त होने पर परिमाणगत परिवर्तन द्वारा इनका विकास भूत से होता है? इस क्यों का कोई उत्तर मार्क्सवादियों के पास नहीं है।

4. प्रकृतिवाद से प्रभावित भौतिकवादियों का कहना है कि भूत के विकासक्रम में एक अवस्था आती है जबकि जीव और चैतन्य उत्पन्न होते हैं। इसका कारण प्राकृतिक नियम है। किन्तु यह तो कोई व्याख्या नहीं हुई।

यह तो यही कहने के बराबर है कि विकास होता है क्योंकि वह होता है। स्पष्टतः यह तर्क नहीं बल्कि तर्काभास है।

5. शक्ति की अनश्वरता के नाम पर भौतिकवाद के लिए दिया गया तर्क भी निर्दोष नहीं है। जीव और चेतन को भूत से स्वतंत्र मानने पर ~~उक्त~~ उक्त नियम का उल्लंघन होता है इसलिए इन्हें स्वतंत्र नहीं माना जा सकता। यही भौतिकवादियों का तर्क है। किन्तु यह तर्क तभी कारगर हो सकता है जबकि पहले यह मान लिया जाय कि जीव, चेतन तथा जड़ सब की व्याख्या भौतिक रासायनिक नियमों द्वारा हो सकती है क्योंकि शक्ति की अनश्वरता का नियम भौतिक रासायनिक नियम ही है। किन्तु यह मान लेना तो भौतिकवाद को ही मान लेना है। अतः यह तर्क भी भौतिकवाद को प्रमाणित करने के पहले ही मान लेता है जो उचित नहीं है।

इस प्रकार मूल तत्व के विकास में भौतिकवाद सफल सिद्धान्त नहीं है। क्योंकि सिर्फ भूत को मूलतत्व मानने से विश्व के सभी अंगों की व्याख्या नहीं होती।